AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / September2023 / Special Issue 09 / Vol. V

24

जनजातीय संस्कृति एवं सतत् विकास
(बलरामपुर जनपद के थारू जनजाति के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. नंदी पटोदिया
सहायक प्राध्यापक
समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग
डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)

अजय कुमार विश्वकर्मा
शोधार्थी
समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग
डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)

शोध सारांश-

किसी भी जनजातीय समूह की पहचान उनकी संस्कृति होती है, चूंकि आदिवासी संस्कृति न केवल परम्परा में संवृद्ध होती है, बल्कि इसकी अनूठी विशेषता सतत् विकास के लक्ष्यों को परिपूर्ण एवं पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करती है। इसी आदिवासी समुदाय में एक थारू जनजाति भी आती है, जो भारत के उत्तराखंड, बिहार और उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों में निवास करती है। थारू जनजाति में जितने भी सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ (जैसे-रोटी, कपड़ा, मकान, कला, धर्म, अर्थ आदि) का गहरा सम्बन्ध पारिस्थितिकी संतुलन एवं प्रकृति से है। आधुनिक युग में बढ़ती औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण के प्रभाव से पूरे समाज की जीवन शैली में परिवर्तन हो रहा है एवं उनमें निवास गैर- आदिवासी के व्यक्तियों द्वारा जनजातिये संस्कृति को, जंगली मानव संस्कृति, आदिवासी मानव संस्कृति एवं पिछड़े मानव संस्कृति की संज्ञा दे रहे है, लेकिन फिर भी आज उन्हीं के कई सांस्कृतिक तत्व / प्रतिमान के पदचिन्हों पर सभ्य समाज एवं राज्य कार्य करने के लिए प्रयासरत है, क्योंकि उनके सांस्कृतिक गतिविधियों का सार अधिक इको-फ्रेंडली एवं सतत् विकास के लक्ष्यों को परिपूर्ण करने में सहयोग प्रदान कर रहा है, अतः यह जनजाति औद्योगीकरण से दूर है। "थारू समुदाय पारिस्थितिकी एवं प्रकृति के रक्षक और थारू संस्कृति के रक्षक पारिस्थितिकी एवं प्रकृति से है।"

मुख्य बिंदु-जनजाति, सतत् विकास, प्राकृतिक संरक्षण, संस्कृति, परम्परा

1. परिचय

भारत को विभिन्नता में एकता का देश कहा जाता है। क्योकि इसमें बहुल नृजातीय समुदाय निवास करते है। इस नृजातीय समुदाय में एक थारू समुदाय आते है। जो सबसे बड़े और इस क्षेत्र के सबसे पुराने जनजातीय समुदाय में से एक है वे सामान्यतया कृषि मछली एवं प्राकृतिक पदार्थ पर निर्भर रहते हैं उनकी अपनी स्वयं की थारू भाषा होती है जिसे स्थानीय भाषा में 'थारुहती (tharuhati) कहते है इसकी उत्पत्ति देवनागिरी लिपि से मानते है। ये हिंदी और अपने आस पास के क्षेत्रीय भाषा को भी बोलते हैं। इनका निवास स्थान तराई भाग के जंगली क्षेत्र में रहता है यह क्षेत्र मलेरिया से अत्यधिक प्रभावित रहता है थारू जनजाति को जनजाति से अनुसूचित जनजाति का दर्जा 1967 के संवैधानिक संशोधन अधिनियम के तहत घोषित किया गया है। इसमे चार और जनजाति (बुक्सा, भोटिया, जौनसारी, राजी) थे। (Yadav 2017) इन जनजातियों में सबसे अधिक जनजाति थारू समुदाय की है। इस समुदाय का अधिक निवास भारत- नेपाल के बार्डर पर जंगली तराई क्षेत्र में रहता है। (Srivastava 1958) थारू जनजाति मुख्य रूप से भारत के तीन राज्यों के कई जिलो में पाए जाते है जो उत्तराखंड के उदमसिंह जिले बिहार राज्य के चंपारण जिले और उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी, बहराइच, बस्ती, गोंडा, बलरामपुर, सिद्धार्थनगर एवं गोरखपुर के जिले में निवास करते है। यह जनजाति नेपाल की भी एक प्रमुख जनजाति है। जिनका निवास अधिक पर्वतीय क्षेत्र में होता है, नेपाल में इनकी जनसंख्या 1,737,470 है। (CBS, 2009), लेकिन भारत के उत्तराखंड राज्य में इनकी कुल जनसंख्या 91,342, उत्तर प्रदेश में 105,291, और बिहार में 159,939 है। (Census 2011)

इस समुदाय के लोग कई स्थानीय देवी-देवताओं की पूजा करते हैं जिन्हें लोकल भाषा में भुइयन' (bhuiyan) और भुमसेन (Bhumsen) कहते है। नेपाल में इसे स्थानीय भाषा में 'गोर राजा' (Gor Raja) कहते है, उनमें हिन्दू धर्म के भी कई देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। जैसे- शिवशंकर, विष्णु, राम, कृष्ण, पर्वती, लक्ष्मी जी आदि एवं ये लोग इस्लाम धर्म, बोद्ध धर्म, जैन धर्म, ईसाई धर्म, आत्मावाद, टोटमवाद में भी विश्वास करते हैं। उनमे अपने देवी- देवताओंको प्रसन्न रखने के लिए पशु बलि

की परम्परा भी प्रचलित है। जिसमे मुर्गी, बत्तख, भेड़, बकरी, सूअर आदि की बलि देते है। इस समुदाय में राष्ट्रीय स्तर की राजनीति नहीं पाई जाती है क्योंकि इतनी जागरुकता इस समुदाय में अभी नहीं आई है, कि वे राष्ट्रीय स्तर के राजनीति में सम्मिलित हो। उस समुदाय का एक प्रधान होता है, जिसे स्थानीय भाषा में मुखिया एवं 'गुरुवा' (Guruwa) कहते है। थारू परिवार में पितृसत्तामक व्यवस्था पाया जाता है लेकिन फिर भी उनमें महिला की प्रस्थिति ऊची होती है। इनमें महिला अशिक्षित होते हुए भी स्वतंत्रत रूप से कोई भी कार्य करने के लिए निर्णय ले सकती है।

2. इतिहास-

थारू जनजाति की उत्पति की चर्चा द्वितीयक स्रोत के आधार पर किया गया है क्योंकि समाजशास्त्री और मानवशास्त्री के लिए यह कठिन कार्य है की उनकी उत्पति के साक्ष्य तथ्य का पता कर पाये। थारू 'Tharu' शब्द की उत्पति राजस्थान के 'Thar Dessert' में हुआ है कई शोधार्थी ने बिना महत्वपूर्ण साक्ष्य के भी परिभाषित करते हुए कहते है कि थारू लोग 13वी से 15वी शताब्दी में राजा के हारने के बाद इधर-उधर प्रवास किये थे। जिसमे अधिकतम लोग जंगल में जाकर रहने लगे थे इसीलिए उन्हें जंगली मानव, आदिवासी मानव, पिछडे हिन्दू मानव की संज्ञा देने लगे। इसका साक्ष्य कई लोक कहानियों में भी प्रस्तुत किया गया है।

डब्लू क्रूके (1896)का मत है कि थारू की उत्पति थारू शब्द से खोजी जा सकती है जो शराबी को दर्शाता है ऐसा माना जाता है की यह नाम थारू को मैदानी इलाकों के एक क्षत्रिय राजा द्वारा थारू की प्रबलता और शराब पीने की क्षमता को देखते हुए दिया गया है।

डी. एन. मजुमदार (1944)ने वर्णन किया है की थारू में मंगोलियाई नस्लीय सम्बन्धता है और वे रक्त समूह परिक्षण या सिरोलाजी के आधार पर राजपूतो के लिए अपनी उत्पति का दावा नहीं कर सकते। उनके पास ज्ञात विशेषताए नहीं है जो उन्हें राजस्थान के राजपूतो से उनकी सांस्कृतिक या नस्लीय प्रथाओं से संबंधित करती है। (srivastava 1965) थारू के बारे में बात करते है की उनके पास मंगोलाइड भौतिक दिखावे है जो की गैर-मगोलाइड जाति के साथ भी लाभदायक रूप से विलय कर दिए गये है।

नेपालीलेखक सुबोध कुमार सिंह के अनुसार राजपूत राजाओं द्वारा आक्रमण की एक श्रृंखला ने स्वदेशी थारू के प्रभाव को कम कर दिया। 1854 में नेपाल के पहले प्रधानमंत्री जंग एब्रेडर ने दुधिया ऐन विकसित किया। नेपाल की स्वदेशी कानूनी प्रणाली का अमलीकरण जिसने समाज को जातियों की व्यवस्था में विभाजित किया। थारू को पदानुक्रम में सबसे नीचे रखा गया था उनकी जमीन हड़प ली गई, उनके समुदाय को बाधित किया गया और लोगो को विस्थापित किया गया था।

सुवास चंद्र वर्मा (2010).ने अपने आलेख में "द इको-फ्रेंडली थारू ट्राइब" में थारू जनजाति की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं अन्य जीवन शैली के गतिविधियों का गहरा सम्बन्ध परीस्थितिकीय एवं प्रकृति से है। इस अध्ययनों से सम्बंधित अन्य विद्वान् सल्तनत वैजिर, एस. के. श्रीवास्तव, आर. पी. श्रीवास्तव, डी. एन. मजुमदार, समीरा मैतई, केया पांडे, सुरजीत सेन गुप्ता, जी. के. घोष, एस. के. सिंह, एल. पी. विद्यार्थी, आदि समाजशात्री और मानवशास्त्री ने थारू जनजाति के संस्कृति का उद्भव, तत्व, प्रतिमान, प्रकार्य एवं अन्य संस्था में भूमिका, सतत् विकास, समुदाय और प्राकृतिक पर्यावरण से सम्बंधित अध्ययन किये है।

3. अध्ययन का उद्देश्य-

- प्रकृति और थारू संस्कृति के बीच सम्बन्ध का परीक्षण करने के लिए।
- सतत् विकास में थारू जनजाति संस्कृति के प्रभाव का आकलन करने के लिए।
- थारू जनजाति के ज्ञान प्रणाली में प्रचलित संस्थाओं के प्रबंधन तकनीकों को समझने के लिए।

4. अध्ययन पद्धतिशास्त्र-

प्रस्तुत शोध अध्ययन की विधि नृजातिशास्त्र Ethnography है। शोध कार्य उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जनपद के विकासखंड पचपेड़वा में स्थिति विशुनपुर विश्राम ग्राम में किया गया है। विशुनपुर विश्राम ग्राम का चुनाव उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के माध्यम से किया गया है जिसमे निवास थारू जनजाति के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, और धार्मिक गतिविधियों का विश्लेषण प्राथमिक तथ्य के आधार पर किया गया है तथ्य संकलन के लिए असंरचित साक्षात्कार, समूह परिचर्चा, एवं प्रत्यक्ष

प्रतिभागी अवलोकन के द्वारा पूर्ण किया गया है। इस अनुसन्धान में द्वितीय तथ्य का भी उपयोग किया गया है जिसमे वर्तमान में थारू जनजाति पर रिसर्च परियोजना, लेख का विश्लेषण किया गया है लेकिन ज्यादातर परिणाम प्राथमिक स्रोत पर आधारित है।

5. सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन शैली की प्रणाली-

थारू समुदाय की सामाजिक- सांस्कृतिक गतिविधियाँ इको-फ्रेंडली होती है ये प्राकृतिक पदार्थ के उपयोग के साथ-साथ पर्यावरण संतुलन को भी बनाये रखते है। इनमें कई प्रकार के गोत्र पाए जाते है जैसे- रावत, बिरातिया, महतो, बुनका, सनसा, बुक्सा, डुगरिया, राना, आदि इस सब गोत्रो में भी उच्चता और निम्नता के स्तर पाए जाते है थारू समुदाय में स्थानीय भाषा में गोत्र को कुरी (kuri) कहते है यह समुदाय अपने लोक-कला को अधिक प्रेम करते है जिसमे थारू गीत, थारू नृत्य, थारू टैटू, थारू दीवाल चित्र, हस्तशिल्प, जादू, आदि यह सब बहुत विशिष्ट और दिलचस्प रहता है जिनमें कई आन्तरिक सार भी होते है। थारू समुदाय के व्यक्ति मांसाहारी होते है जिसके साथ चावल अधिक खाते है मांसाहारी में अत्यधिक सेवन मछली का इसके बाद मुर्गी, बत्तख, बकरी, भेड़ और जब वे शिकार खेलते थे तो अन्य कई जंगली जानवर के माँस का भी उपभोग करते थे जबसे सरकार ने शिकार करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया है तब से उन समुदाय में शाकाहारी का भी उपभोग बड़ा है क्योंकि मांसाहारी पदार्थ अधिक महंगा है और वे इतने गरीब है की मांसाहारी पदार्थ खरीदने में असमर्थ होते है।

थारू गांव- भारत नेपाल बॉर्डर के जंगली तराई क्षेत्र में बसा हुआ है इनका निवास स्थान शहर से आई सड़क के बगल में है जिसमे छोटे छोटे घर लकड़ी, घास, फूस,पत्ते से बने हुए जो एक दूसरे से नजदीक होते है। गाँव में 60 घर के साथ उसमे आगनबाड़ी केन्द्र, प्राथमिक स्कूल, स्वास्थ्य केंद्र, बालिका कालेज और आई टी आई संस्थान भी है।

थारू घर- इस समुदाय का घर लकड़ी, घास-फूस, पत्तियों, एवं मिट्टी के बने दीवाल से होता है। उस गाँव में 15 घर पक्के यानि पत्थर, ईट, बालू, सीमेंट से बने है बाकि सब घर लकड़ी से बना है उनका घर अत्यधिक साफ़ सुथरा होने के साथ ठंडक, गर्मी, बरसात सब में सुविधायुक्त होता है। घर के अन्दर ज्यादा रूम बने होते, जिसमे जानवरों के लिए अलग, किचन के लिए अलग, अनाज रखने के लिए अलग, सोने के लिए अलग बने होते है। अधिकतर घर का निकास पूरब दिशा की तरफ एवं घर के बाहर आगन पीछे फल-फूल के लिए जगह होता है वे घर की सजावट के लिए पोशाक और पेंटिंग में विपरीत रंग पसंद करते है। (Govila 1959)

थारू धर्म- इस समुदाय में स्थानीय देवता को 'भूमसेन' कहा जाता है जिसे अन्दर के देवता और बाहर के देवता में बाटा जाता है अन्दर के देवता में प्रत्येक घर के वंशानुगत देवी-देवता होते, और बाहर के देवता में पुरे समुदाय के प्रतिनिधित्व टोटमवाद के द्वारा होता है। टोटम कोई भी जैविक एवं अजैविक पदार्थ हो सकता है, जैसे. पशु, पौधे, जल, पहाड़, चन्द्रमा. सूर्य आदि। जिसको समुदाय कभी भी कोई हानि नहीं पहुंचाता है बल्कि उसका संरक्षण प्रदान करते है और उसके साथ कई लोक मिथ्या कहानियाँ होती है जो वंशानुगत रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। यह समुदाय कई हिन्दू देवी-देवताओ की भी पूजा और त्योहारों को मनाते है।

थारू संस्कृति- थारू समुदाय की संस्कृति इको-फ्रेंडली होती है इनकी सभी सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ जिसमे रोटी, कपड़ा, मकान, कला, धर्म, अर्थ का सम्बन्ध परीस्थितिकीय एवं प्रकृति से है, उनके मानव गतिविधियाँ इस प्रकार से की जाती है की वे अपनी आवश्यकता की पूर्ति और एरीस्थितिकीय संतुलन भी बनाये रखते है। आधुनिक युग में औद्योगीकरण, नगरीकरण वैश्वीकरण के प्रभाव से थारू युवा भी प्रभावित हो रहे है। जिसके कारण वे अपनी वंशानुगत रूप से चली आ रही परम्परा को अनदेखा कर रहे है, थारू युवा शिक्षा, प्रौद्योगिकी, सम्प्रेषण को प्राप्त करे, बल्कि उनको अपनी परम्परा को भी ध्यान रखना पड़ेगा क्योंकि उनकी परम्परागत संस्कृति ही उनकी पहचान होती है।

6. सतत् विकास और प्रदुषण के प्रति जागरूकता-

सतत् विकास, विकास की वह प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत वर्तमान पीढ़ी, या आने वाली पीढ़ी की आवश्यकताओं से समझौता किये बिना प्रकृति एवं पर्यावरण पर ध्यान देकर किये गए सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक विकास को प्रगति कहते हैं (UNDP) यह विकास की प्रक्रिया एतिहासिक रूप से थारू समुदाय की सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों में दिखाई दे रहा था लेकिन इन्ही जनजातीय सांस्कृतिक गतिविधियों को गैर-आदिवासी समाज के व्यक्तियों द्वारा जंगली मानव संस्कृति, आदिवासी मानव संस्कृति, पिछड़ी मानव संस्कृति की संज्ञा दे रहे थे। इस प्रकार जब राज्य प्रगति की मार्ग पर इतना विकसित हुआ की इससे पर्यावरण एवं परीस्थितिकीय का हनन होने लगा तो इन्हीं पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करने के लिए सतत् विकास की प्रक्रिया को

प्रासंगिक किया गया और यह प्रक्रिया हमारे उन्ही जनजातीय संस्कृति के प्रतिमान चिन्हों पर राज्य और गैर-आदिवासी समाज कार्य करने के लिए प्रयासरत है। यह समुदाय सिर्फ पर्यावरण संरक्षण के प्रति ही नही बल्कि अन्य कार्यों में भी जागरूक है जो निम्न है-

• थारू जनजाति जंगल में निवास करते हैं फिर भी वे अपने समुदाय को प्रदुषण रहित बनाये रखते है।
• थारू समुदाय में पुरुष और महिला दोनों में व्यक्तिगत स्वच्छता के प्रति जागरूक होते है।
• धारू समुदाय के व्यक्ति घर का सारा कूड़ा-कचरा और मवेशियों का कूड़ा-करकट रास्ते में नहीं बल्कि गांव के बाहर या खेत में फेंकते है।

थारू जनजाति की पुरानी पीढ़ी के व्यक्ति पर्यावरण और प्रकृति के प्रति अधिक जागरूक थे लेकिन जो नयी पीढ़ी के युवा प्रगति कर रहे है वे न तो अपनी परम्परा के प्रति अधिक जागरूक और न ही पर्यावरण के प्रति जागरूक है यह समस्या आने वाले समय में थारू समुदाय के अस्थित्व को विलुप्त कर देगा क्योंकि उनकी संस्कृति ही उस समुदाय की पहचान होती है।

7.केस अध्ययन- (डूगरिया थारू)

यह जनजाति हमेशा से जंगल के बहुत करीब रहा है। इसलिए, उन्हें 1881 में "वन जनजाति" और 1921 में "पहाड़ी और वन जनजाति" के रूप में संदर्भित किया गया था। यह उन महत्वपूर्ण तथ्यों में से एक है जो मुख्यधारा के समाज से अलग हैं। यही विशिष्टता उन्हें एक जनजाति होने का दर्जा देती है। इसके बाद, स्थानीय संस्कृति ने अपने आवास और पारिस्थितिक प्रबंधन को बनाए रखने के लिए इसे अपनाया है। इसमें वन उपज, वनस्पति और उनके प्राकृतिक उपयोग के संग्रह, उपयोग और उपभोग, कृषि प्रथाओं, पशुधन और हस्तशिल्प के ज्ञान के बारे में एक ज्ञान प्रणाली शामिल है। इसकी पहचान लोक या स्वदेशी या पारंपरिक ज्ञान के रूप में की गई है जो एक समुदाय के भीतर पीढ़ियों से प्रसारित होता है। यह बाद में लोककथाओं, कहावतों, लोकगीतों और कहानियों, सांस्कृतिक मान्यताओं, मूल्यों आदि का रूप ले लेता है। अनुष्ठान, जो उस समूह को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान प्रदान करते हैं। जिसमें **विवाहिक अनुष्ठान, झंडी पूजा, हरवत पूजा,फार पेयना भीख पूजा, धुरियाँ पूजा, हरेरी पूजा, लवांगी पूजा, गोरु बेधे पूजा आदि, स्थानीय संस्कृति प्रकृति के साथ उनका सौहार्दपूर्ण संबंध प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग के उनके ज्ञान का परिणाम है।**

8. निष्कर्ष-

उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट है की थारू जनजाति की सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ इको-फ्रेंडली होती है और यह उनके सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने में प्रतिनिधित्व प्रदान करती है। समुदाय के व्यक्तियों द्वारा प्रकृति स्रोत में अधिक संरक्षण एवं सम्मान जल, जंगल जमीन को देते हैं। उनके जितने भी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं अन्य जीवन शैली की गतिविधियाँ प्रकृति पर केन्द्रित है इस समुदाय में पितृसत्तात्मक व्यवस्था पाया जाता है लेकिन फिर भी महिला की प्रस्थिति पुरुषो के बराबर होता है वे स्वतंत्र रूप से कोई भी कार्य करने के निर्णय ले सकती है इसीलिएइसमें महिला सशक्तिकरण की अवधारणा उतना प्रतिफलित नहीं है। थारू सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ विशिष्ट होने के कारण उनका निवास स्थान पर्यटन क्षेत्र के रूप में उभर रहा है इसी पर्यटन क्षेत्र को और बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार "होम स्टे योजना" (Home Stay Yojna) के द्वारा बलरामपुर, बहराइच, लखीमपुर खीरी, पीलीभीत में रहने वाले थारू गावों को विश्व स्तर पर प्रदर्शित कर रही है। थारू समुदाय की संस्कृति अद्भुत है क्योंकि उनके सांस्कृतिक गतिविधियों के विशिष्ट सार होते है लेकिन फिर भी नए पीढ़ी के थारू युवा प्रमुख रूप से जो शिक्षित एवं उच्च शिक्षित है वे अपनी परम्परागत संस्कृति के प्रति जागरूक नहीं है कुछ लोग कोशिश करते है, अपने सामाजिक- सांस्कृतिक मूल्यों को बनाये रखने के लिए, बल्कि अधिक संख्या में थारू युवा अपने परम्परागत सांस्कृतिक गतिविधियों को नजरअंदाज कर रहे है इससे न सिर्फ उनकी संस्कृति का ह्रास होगा बल्कि प्राकृतिक दोहन में वृद्धि होगी और थारू जनजाति का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जायेगा क्योंकि संस्कृति ही उनके समुदाय की पहचान होती है। युवा अपने व्यक्तित्व का विकास अधिक से अधिक कर सकते है लेकिन उनको अपने परंपरागत संस्कृति को भी ध्यान रखना पड़ेगा ताकि उनके संस्कृति, पर्यावरण और अस्तित्व तीनों बना रहे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची-

Verma,S.C.(2010). "The Eco-friendly Tharu Tribe: A Study in Socio cultural Dynamics", journal of Asia Pacific Studies.

Sameera,Maiti.(2001). "Tribal Arts and Crafts: A Study among the Tharu of Uttar Pradesh", Indian Anthropologist.
Majumdar,D.N.(1942). "Tharus and their blood groups", Journal of Royal Asiatic Society of Bengal.
Shrivastava,S.K.(1958)."The Tharu: A study in culture dynamics", Agra university press.
Janah,Sunil.(2003).''The Tribal of India", Oxford University Press.
Sarkar,Amit and Dasgupta,Samira.(2000).''Ethno-Ecology of Indian Tribe",Rawat Publication, Jaipur,Surabhi Publication, Jaipur.
Xaxa,Virginius.(1999)."Tribes as indigenous people of India",Economical and Political weekly.
Bose,N.K.(1971)."Tribal life in India",National book trust,New Delhi.
Sattar,abdus.(1975)."Tribal culture in Bangladesh",Dhaka publication.
Singh,Suresh.(ed.) (1972). "Tribal Situation in India", Indian Institute of Advanced study,Shimla.
Vidyarthi, L.P. and Rai, B·K.(1985). "The Tribal Culture of India", Concept Publishing Company,New Delhi.
Khanna,D.R.(2014)."Environment Biodiversity and Traditional system",Biotech books,New Delhi.
https://tritribal.gov.in/
https://tribaldevelopmentibrad.org/#:~:text=The%20fundamental%20need%20for%20survival,This%20requires%20integrated%20landscape%20management.
https://link.springer.com/chapter/10.1007/978-981-16-7310-8_23
https://www.etribaltribune.com/index.php/volume-3/mv3i4/a-brief-note-ofsustainable-development-among-himalayan-tribes
https://link.springer.com/article/10.1007/s43621-021-00009-